ईसाइयों को उनके त्योहारों की बधाई देना

تهنئة النصارى بأعيادهم

[**हिन्दी** – Hindi – هندي]

इफ्ता एवं वैज्ञानिक अनुसंधान की स्थायी समिति

اللجنة الدائمة للبحوث العلمية والإفتاء

अनुवादः **अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह**

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2014 - 1436

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

ईसाइयों को उनके त्योहारों की बधाई देना

प्रश्नः

ईसाइयों को उनके त्योहारों में बधाई देने के बारे में इस्लाम का क्या प्रावधान है ; क्योंकि मेरे मामूँ का एक ईसाई पड़ोसी है जिसे वह त्योहारों और खुशी (शादी) के अवसरों पर बधाई देते हैं और वह भी मेरे मामूँ को खुशी और त्योहार के हर अवसर पर बधाई देता है। क्या यह जायज़ है कि मुसलमान ईसाई को और ईसाई मुसलमान को उनके त्योहारों और शादियों में बधाई दे? आप मुझे शरीअत के प्रावधान से अवगत कराएं, अल्लाह आपको अच्छा बदला प्रदान करे।

उत्तरः

मुसलमान के लिए ईसाइयों को उनके त्योहारों में बधाई देना जायज़ नहीं है। क्योंकि इस में गुनाह पर सहयोग करना पाया जाता है, जबकि हमें इससे रोका गया है। अल्लाह तआला का कथन है :

﴿ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ﴾ [المائدة :٢]

गुनाह (पाप) और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो।" (सूरतुल मायदाः २)

तथा इसके अंदर उनसे प्यार और लगाव का प्रदर्शन, उनकी दोस्ती व प्यार की चाहत, उनसे और उनके प्रतीकों से सन्तुष्टि का इज़हार पाया जाता है और यह जायज़ नहीं है। बल्कि अनिवार्य यह है कि उनसे दुश्मनी का इज़हार किया जाए और उनके द्वेष को स्पष्ट किया जाए ; क्योंकि वे अल्लाह सर्वशक्तिमान से दुश्मनी करते हैं, उसके साथ दूसरे को साझी ठहराते हैं और उसके लिए बीवी और बच्चे बनाते हैं, अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ ﴾ [المجادلة :٢٢]

''आप अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखने वालों को ऐसा नहीं पाएंगे कि वे अल्लाह और उसके पैग़म्बर से दुश्मनी रखने वालों से दोस्ती रखते हों, चाहे वे उनके बाप, या उनके बेटे, या उनके भाई, या उनके कुंबे–क़बीले वाले ही क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह तआला ने ईमान को लिख दिया है और जिनका पक्ष अपनी रूह से किया है।'' (सूरतुल मुजादिला : 22)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ ﴾ [الممتحنة :٤]

(मुसलमानो!) तुम्हारे लिए इबराहीम (अलैहिस्सलाम) में और उन लोगों में जो उनके साथ थे अच्छा आदर्श है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कह दिया कि "हम तुमसे और अल्लाह से हटकर जिन्हें तुम पूजते हो उनसे विरक्त (बेज़ार) हैं। हमने तुम्हारा इनकार किया और हमारे और तुम्हारे बीच सदैव के लिए वैर और विद्वेष प्रकट हो चुका जब तक तुम अकेले अल्लाह पर ईमान न लाओ।" (सूरतुल मुम्तहिनाः ४)

और अल्लाह तआला ही तौफीक़ प्रदान करने वाला है, तथा अल्लाह हमारे ईश्दूत मुहम्मद, उनकी संतान और उनके साथियों पर दया एवं शांति अवतरित करे।'' अंत हुआ।

इफता और वैज्ञानिक अनुसंधान की स्थायी समिति

शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज (अध्यक्ष), शैख अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अफीफी (उपाध्यक्ष), शैख अब्दुल्लाह बिन गुदैयान (सदस्य),

''फतावा स्थायी समिति'' (3/435–436).